No. of Printed Pages : 6

BPY–001

BACHELOR'S DEGREE PROGRAMME (PHILOSOPHY) (BDP)

Term-End Examination

June, 2025

(Elective Course : Philosophy)

BPY-001 : INDIAN PHILOSOPHY—I

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

***Note** : (i) Answer all the **five** questions.*

(ii) All questions carry equal marks.

*(iii) Answer to question nos. **1** and **2** should be in about **400** words each.*

1. Discuss in detail the nature of the Ultimate Reality and Moksha as expounded in Svetasvatara Upanishad. 20

Or

Explain and analyze the concepts of 'Jiva' and 'Ajiva' as given in Jain Metaphysics. 20

2. What are the *three* boons asked by Nachiketas in Katha Upanishad ? Explain the philosophical significance of the *three* boons. 20

Or

Critically evaluate and analyze the concept of soul as expounded in Charvaka Metaphysics. 20

3. Answer any *two* of the following questions in about **200** words each :

   (a) Explain the concepts of Jivan Mukti and Videha Mukti. 10

   (b) How does Māndūkya Upanishad identify 'AUM' and 'Self' ? Explain. 10

   (c) Explain the concept of Shunyavāda of Mādhymikas. 10

   (d) Discuss the theory of Syādvāda of Jain Philosophy. 10

4. Answer any *four* of the following questions in about **150** words each :

   (a) Briefly explain the theory of dependent origination *or* Pratityasamutpāda. 5

(b) Differentiate between 'Para' and 'Apara' Vidya. 5

(c) Explain the 'Turiya' state of consciousness as propounded by Māndūkya Upanishad. 5

(d) Briefly explain the unique features of Kena Upanishad. 5

(e) Explain the theory of 'Eight-fold Path' of Buddhism. 5

(f) What are the philosophical implications of Tajjalaniti ? Explain. 5

5. Write short notes on any *five* of the following in about **100** words each :

(a) Individual self and cosmic self 4

(b) Triratnas of Jainism 4

(c) Concept of Ṛta 4

(d) Deep sleep state 4

(e) Polytheism 4

(f) Shiksha Portion of Vedānga 4

(g) Moral Philosophy of Vidura 4

(h) Pudgala in Jain Metaphysics 4

BPY–001

स्नातक उपाधि (दर्शनशास्त्र) (बी. डी. पी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

(ऐच्छिक पाठ्यक्रम : दर्शनशास्त्र)

बी.पी.वाई.-001 : भारतीय दर्शन-I

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

(ii) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

*(iii) प्रश्न क्रमांक **1** और **2** के उत्तर लगभग **400-400** शब्दों में दीजिए।*

---

1. श्वेताश्वतर उपनिषद् में वर्णित परम सत्य और मोक्ष की प्रकृति की विस्तृत चर्चा कीजिए। 20

अथवा

जैन तत्त्वमीमांसा में प्रतिपादित 'जीव' और 'अजीव' की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए और विश्लेषण कीजिए। 20

2. कठोपनिषद् में नचिकेता के द्वारा पूछे गए **तीन** वरदान कौन-से हैं ? **तीनों** वरदानों के दार्शनिक महत्व की व्याख्या कीजिए। 20

अथवा

चार्वाक् तत्त्वमीमांसा में वर्णित आत्मा की अवधारणा का मूल्यांकन और विश्लेषण कीजिए। 20

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **200-200** शब्दों में दीजिए :

(क) जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। 10

(ख) माण्डूक्य उपनिषद् 'ओउम्' और 'आत्मा' का तादात्म्य कैसे करता है ? व्याख्या कीजिए। 10

(ग) माध्यमिक दर्शन के शून्यवाद की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। 10

(घ) जैन दर्शन के स्याद्वाद की चर्चा कीजिए। 10

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग **150-150** शब्दों में दीजिए :

(क) प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धान्त की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। 5

(ख) 'परा' और 'अपरा' विद्या के मध्य अन्तर कीजिए। 5

(ग) माण्डूक्य उपनिषद् द्वारा प्रतिपादित चेतना की 'तुरीय' अवस्था की व्याख्या कीजिए। 5

(घ) केनोपनिषद् की विशिष्टताओं की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। 5

(ङ) बौद्ध दर्शन के 'आष्टांगिक मार्ग' के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए। 5

(च) तज्जालनीति के दार्शनिक निहितार्थ क्या हैं ? व्याख्या कीजिए। 5

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर लगभग 100-100 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) वैयक्तिक आत्म और ब्रह्माण्डीय आत्म 4

(ख) जैन दर्शन में त्रिरत्न 4

(ग) ऋत् की अवधारणा 4

(घ) सुषुप्ति 4

(ङ) बहुदेववाद 4

(च) वेदांग का शिक्षा भाग 4

(छ) विदुर का नैतिक दर्शन 4

(ज) जैन तत्त्वमीमांसा में पुद्गल 4

× × × × ×